स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय,

विद्यावाचस्पति (Ph.D)(हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध विषयकी रूपरेखा

(SYNOPSIS)

शीर्षक

“वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किन्नर समुदाय की स्थिति और गतिः एक अनुशीलन”

(२१ वी सतीके हिंदी उपन्यासों के विशेष संदर्भ में)

शोधकर्ता

श्री. परमेश्वर माणिकराव वाकडे

एम.ए,एम.एड, सेट(हिंदी),सेट(शिक्षाशास्त्र)

शोध निर्देशक

डॉ.रणजीतजाधव

एम.ए,पीएच.डी

हिंदी विभाग प्रमुख

कै. व्यंकटराव देशमुख महाविद्यालय,बाभळगाव,

ता.जि.लातूर

अनुसंधान केंद्र

दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर

२०१९

अनुक्रमणिका

अ.क्र	विषय वस्तु का नाम	पेजनं.
१.१	प्रस्तावना	१से३
१.२	विषय चयन की प्रेरणा	३से३
१.३	शोध विषय का महत्व	३से४
१.४	अनुसंधान का उद्देश्य	४से४
१.५	अनुसंधान की पद्धति	४से४
१.६.	शोध विषय की रूपरेखा	५से७
१.७	अनुसंधान के निष्कर्ष	८से८
१.८	संदर्भ सूची	९से९

“वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किन्नर समुदाय की स्थिति और गति : एक अनुशीलन”

१.१प्रास्ताविक

किन्नर! शब्दसुनतेहीआज भी लोगों के मन में एक विकृतआकृति खिंच जाती है,घृणाके भाव उत्पन्न हो जाते हैं। सभी सृष्टि के निर्माता ईश्वर है । मनुष्य में नर, नारी और उभय लिंगी भी उसकी ही रचना है । मनुष्य में उभयलिंगी यानी हिजड़ों को हमहाशिएमें रखते चले आ रहे हैं।उन्हें सामाजिक मान्यता,आदर, सम्मान तो दूर ‘हिजड़ा’शब्द एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए गाली के रूप में इस्तेमाल करते चले आ रहे हैं, जो सुनने वालों के ह्रदय को भेद डालता है।हिजड़ों की चार शाखाएं हैं -बुचरा, नीलिमा, मनसा और हंसा।बुचरा जन्मजात हिजरा होता है। नीलिमा स्वयं बने हिजड़ा है । मनसा स्वेच्छा से शामिल तथा हंसाशारीरिककमी के कारण बने हिजड़े हैं।

किन्नरों के उद्भव बा अतीत के संबंध में एक अंतर्कथाएं प्रचलित है, रामायण की परचरी कथा से किन्नरों की निश्चल और निस्वार्थ भावना से अविर्भूत हुई-

‘जोगुकरीविनयप्रणामा, विदा किए सबसानुजरामा।

जथानारि पुरुष लघु मध्य बडेरे,सब सनमानिकृपानिधिफेरे'।।

रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड

महाभारत के समय में भी किन्नर समुदाय की उपस्थिति रही है । शिखंडी पात्र को ‘थर्ड जेंडर’का प्रतिरूप स्वीकारा जाता है । अर्जुन ने भी अज्ञातवास का समय ‘बृहन्नला’केनाम से व्यतीत किया। ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार हिंदूवमुस्लिम राजाओं द्वारा अंतःपूरमेंरानियों की पहरेदारी के लिए किन्नरों का इस्तेमाल किया जाता था । अल्लाउद्दीन खिलजी के समय में किन्नर वरिष्ठ सैनिक अधिकारी के रूप में कार्यरत रहे । जहांगीर ने भीख्वाजासराहिलाल को प्रशासनिक अधिकारी व इफ्तिखारखानको जागीर का फौजदार बना दिया था । सुल्तान मुजफ्फर के शासनकाल में मुमित-उल-मुल्क कोतवाल की पदवी पर आसन था । संस्कृत नाटकों व कौटिल्य केअर्थशास्त्र में भी कहां गया है की राजा को भी हिजड़ों पर हाथ नहीं उठाना चाहिए। किन्नर समुदाय को धर्म ने,पुराणों ने स्वीकारा जिनका का इतिहास४००० साल पुराना रहा है।

१५अप्रैल २०१४ को सुप्रीम कोर्ट ने किन्नरों को तीसरे लिंग के रूप में कानूनी पहचान दी । केंद्र कथा राज सरकारों को निर्देश दीया गया की किन्नरों को अपना अलग आधार कार्ड, पहचान पत्र, ड्राइविंग लाइसेंस, पासपोर्ट आदि बनाने का हक है । न्यायालय ने उन्हें सम्मान से जीने के लिए यह अधिकार दिए हैं ।साथ अपने जीवन जीने के बारे में निर्णय लेने का अधिकार भी दिया है। संविधान के अनुच्छेद १४ में कानून के समक्ष समानता की बात कहीं गई है। संविधान के अनुच्छेद १५में किसी लिंग या सेक्स के आधार पर भेदभाव प्रतिबंधित है। अनुच्छेद १५ के अंतर्गत कानूनी रूप से लागू किए गए नियम और व्यक्तियों के बीच नियमों के पालन में अंतर होता है। इसे विडंबना ही कहा जाएगा, कि देश में योन स्थिति के कारण सामाजिक एवं शैक्षिक रुप से पिछड़े तृतीय लिंग के पुनर्वास उनके जीवन स्तर में सुधार, सामाजिक संरक्षणआदिकेलिएसरकारीस्तरपरकोयीप्रयासनहीकियागयाहै।अनुच्छेद१७मे छुआछूत का निषेध किया गया है ।भारतीय नागरिक होने के बावजूद तृतीय लिंग समुदाय संविधानप्रदत्त अधिकारों से वंचित है। हमने उन्हें उपेक्षित और बहिष्कृत कर के रखा है।

वर्तमान समय में किन्नर जीवन को लेकर हिंदी साहित्य जगत में अनेक प्रकार की साहित्यिक रचनाएं लंबे अंतराल के बाद पुन :विकास के पथ परहै। साहित्य से अधिक हिंदी और अन्य भारतीय भाषा की फिल्ममें किन्नर या ट्रांसजेंडर की मानसिकता और जीवन संघर्ष का चित्रण होने लगा है। किन्नर समाज सामाजिक व्यवस्था के लिए वर्जित होने के कारण फिल्मनेभीउनकी यथार्थ को अनदेखा किया । 21वीं सदी में साहित्य से अधिक मीडिया सामाजिक समस्याओं को ध्यान देने लगा है।

हिंदी कथा साहित्य में इन पर अधिक मात्रा में लेखन कार्य नहीं हुआ है लेकिन जितना भी हुआ है , उन सभी से इनको सम्मान की दरकार रही है । यह लोग भी अपनी मूलभूत आवश्यकताओं, अधिकारों और आम आदमी की तरह जीवन यापन करने की आकांक्षा रखते हैं। इनके आजीवन संघर्षरत रहने की व्यथा कथा चित्रण करने वाली कुछ महत्वपूर्ण उपन्यासों की चर्चा मैं यहां करना चाहूंगा , जिनके माध्यम से लेखकोंने जो विषय अब तक शर्म का विषय समझा जाता था , उसको प्रकाश में नानी का साहसिक कदम उठाया । इसी क्रम में महेंद्र भीष्म द्वारा लिखित ‘किन्नर कथा’, नीरजा माधव का‘यमदीप’, प्रदीप सौरभ का ‘तीसरी ताली’ , निर्मला भुराडिया का‘गुलाम मंडी ’, चित्रा मुद्गल का ‘पोस्ट बॉक्स नं .२०३ नालासोपारा’का नाम लिया जा सकता है।

किन्नर समाज,जिसके साथ बिल्कुल उपेक्षित सा व्यवहार किया जाता है, उपहास उड़ाया जाता है, उसको आज सम्मान की दरकार है। वे आम आदमी की तरह जीने का अधिकार रखते हैं। आज उनकी व्यथा कथा, समस्याएं, उपेक्षा और तकलीफ से हमारे समाज को रूबरू होने की आवश्यकता है। उनको भी समाज की मुख्य धारा, समाज में जीने रहने का अधिकार है। आज

साहित्य उनकी पीड़ा की अभिव्यक्ति के लिए तरस रहा है , किंतु उसको उचित अभिव्यक्ति नहीं पे मिल पा रही है। किन्नर समाज को लेकर अभी तक कम ही लेखन हुआ है लेकिन जितना भी हुआ है, उसने साहित्य के प्रति हमारे दृष्टिकोण में खासा परिवर्तन किया है।

१.२विषय चयन की प्रेरणा-

रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड, सार्वजनिक जगहों पर किन्नर समुदाय के लोग भिखमांगते हुए नजर आते हैं। समाज उनकी ओर घृणा या हंसी मजाक की नजर से देखता है । उनके करीब जाने से भी आम आदमी डरता है।वे ऐसे दिखाई देते हैं,जैसे कोई अलग प्राणियों का झुंड आया हो। सभी उन्हे अलग नजर से देखते हैं । उनके साथ सुख -दुःख की तो छोड़ो सामान्य बातें भी कोई सहजतासेअन्य व्यक्तियों की तरह नहीं करता। उनकी भी कोई अपनी सोच होगी? उनको भी कुछ कहने सुनने का मन करता होगा? इन सवालों में इस विषय का शोध कार्य करने की प्रेरणा मिलती है । जिसमें उनके सामाजिक ,आर्थिक, सांस्कृतिक , कौटुंबिक,रराजनीतिक तौर पर अस्तित्व की खोज हो ,उन्हें वर्तमान में समाज किस नजर से देखता है? इसकी परेशान हो, यह जानने का प्रयास ही इस विषय की प्रेरणा है।

१.३शोध विषय का महत्व-

प्रस्तुत शोध कार्य में वर्तमान परिपेक्ष में किन्नर समुदाय की स्थिति एवं गति का शोधकर्ता द्वारा अध्ययन किया जाएगा। जिसमें किन्नरों की सामाजिक, कौटुंबिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक,सांस्कृतिकपरिस्थितियों का अवलोकन किया जाएगा। जिससे समाज के उस तबके को हाशिए पर लाने का प्रयास होगा , जो सामान्य जीवन से कोसों दूर है । उनको उनकी पूर्व स्थिति, उनमें छिपी योग्यताओं से परीचीत करने का प्रयास होगा। सत्ता में अपना अस्तित्व, शिक्षा का अधिकार , सभी कार्यक्रमों , जगहों पर सामान्य जीवन जीने का अधिकारों से परिचित करने का प्रयास होगा।

समाज में किन्नरों की और देखने का नजरिया बदलेगा , उन्हें उसी रूप में स्वीकार करने में सहायता होगी। शासन स्तर पर उनकी ओर देखने का रूख बदलेगा। उनकी समस्याओं से रूबरू होकर उनकी शिक्षा , आर्थिक उन्नति , सामाजिक मान्यताएं, कानूनी अधिकार देने का प्रयास होगा।मीडियाउन्हें सामान्य तौर पर देखें इस दृष्टि से यह शोध कार्य सेसहायतामिलेगी।

१.४अनुसंधान का उद्देश्य-

1. किन्नर समुदाय की पूर्वपिठीकाका अध्ययन करना।
2. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किन्नर समुदाय की सामाजिक, कौटुंबिक,एवं मनोवैज्ञानिक और गति का अध्ययन करना।
3. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किन्नर समुदाय की आर्थिक, शैक्षिक एवं आरोग्य विषयक स्थिति और गति का अध्ययन करना।
4. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किन्नर समुदाय की धार्मिक , सांस्कृतिक एवं नैतिक तिथि और गति का अध्ययन करना।
5. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किन्नर समुदाय की राजनीतिकएवंअन्य स्थिति और गति का अध्ययन करना।

१.५ अनुसंधान पद्धति-

प्रस्तुत अनुसंधान"वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किन्नर समुदाय की स्थिति और गति : एक अनुशीलन" के लिए शोधकर्ता विवेचनात्मक , वर्णनात्मक , आलोचनात्मक , विवरणात्मकएवं तुलनात्मक पद्धतियों काअवलंब करना चाहता है।

१.६ शोध विषय की रूपरेखा-

प्रथम अध्याय: किन्नर समुदाय की पूर्वपिठीका-

इस अध्याय में शोधकर्ता किन्नर समुदाय का उगम, किन्नर शब्द का नामकरण, उनकी पूर्व स्थिति (सामाजिक,आर्थिक,शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक, धार्मिक सांस्कृतिक , राजनीतिक, कौटुंबिक) का वर्णन एवं विश्लेषण होगा।

द्वितीय अध्याय : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किन्नर समुदाय की कौटुंबिक , मनोवैज्ञानिक स्थिति और गति-

अ-वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किन्नर समुदाय की सामाजिक स्थिति और गति

- सामाजिक स्थान
- सामाजिक मान्यताएं (रीति-रिवाजों, परंपरा,अंधश्रद्धाएं)
- सामाजिक बदलाव एंवआवश्यकताएं

ब-वर्तमान परिप्रेक्ष्यमें किन्नर समुदाय की कौटुंबिक की स्थिति और गती

- कौटुंबिक स्थान
- कौटुंबिक मान्यताएं
- वैवाहिक जीवन
- कौटुंबिक बदलाव एंव आवश्यकताएं

क-वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किन्नर समुदाय की मनोवैज्ञानिक स्थिति और गती

- भावना, संवेदना
- मानसिक यातनाएं,पीडा
- बदलाव एवं आवश्यकताएं

तृतीय अध्याय : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किन्नर समुदाय की आर्थिक ,शैक्षिक, आरोग्य विषयक और गति-

अ-वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किन्नर समुदाय की आर्थिक स्थिति और गति-

- वर्तमान समय में आर्थिक स्थिति
- अर्थाजनके साधन
- आर्थिक बदलाव और आवश्यकताएं

ब-वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किन्नर समुदाय की शैक्षिक स्थिति और गति-

- शिक्षा में स्थान
- शिक्षा के अवसर
- शिक्षा सुविधाएं
- बदलावएंव आवश्यकताएं

क-वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किन्नर समुदाय की आरोग्य विषयक स्थिति और गति

- आरोग्य विषयक स्थिति
- आरोग्य विषयक सुविधाएं
- बदलाव एंव आवश्यकताएं

चतुर्थ अध्याय: वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किन्नर समुदाय की धार्मिक, सांस्कृतिक,एंव नैतिक स्थिति और गति-

अ-वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किन्नर समुदाय की धार्मिक स्थिति और गति-

- धार्मिक स्थान
- श्रद्धा, विश्वास
- बदलावएंव आवश्यकताएं

ब-वर्तमानपरिप्रेक्ष्य में किन्नर समुदाय की नैतिक स्थिति और गति

- नैतिक स्थान
- धारणाएं
- बदलावएवंआवश्यकताएं

क-वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किन्नर समुदाय की सांस्कृतिकस्थिति और गति

- सांस्कृतिक स्थान
- धारणाएं, परंपरा, रिती रिवाज
- बदलावएवं आवश्यकताएं

पंचम अध्याय: वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किन्नर समुदाय की राजनीतिक एवं अन्य स्थिति और गति

- राजनीति स्थिति
- राजनीतिक अवसर
- बदलावएवं आवश्यकताएं

षष्ठअध्याय: संशोधन सार

किस अध्याय में शोधकर्ता सभी अध्याय का अनुशीलन योग मूल्यांकन सार रखेगा। साथ ही अन्य तौर पर किन्नरसमुदायके अन्य विषयों के संदर्भ मेंअनुसंधान के विषय पर चर्चा होगी।

१.७ अनुसंधान के निष्कर्ष-

1. प्राचीन काल में किन्नर समुदाय मान्यता प्राप्त था । समाज, राजनीति, धर्म, संस्कृति मैं उसे ऊंचा स्थानथा।
2. वर्तमान परिपेक्ष में किन्नर समुदाय की सामाजिक स्थिति निचले स्तर पर है। समाज में इस समुदाय को मान्यता नहीं है।
3. आर्थिक दृष्टि से किन्नर समुदाय पिछड़ा है। उसके पास अर्थाजनके साधन नहीं है। खानपान, पहनावा, आरोग्य की दृष्टि से स्थिति विकट है।
4. किन्नर समुदाय अंधश्रद्धा, परंपरा, रिती रिवाज का शिकार है।
5. राजकीय तौर पर किन्नर समुदाय अछूता है। फिर भी आज के समय में कहीं जगह पर वह राजनीति में आने का प्रयास कर रहा है।
6. आज के समय कानूनी तौर पर किन्नर समुदाय को अधिकार मिले हैं। आर्थिक दृष्टि से अपनी जगह बनाने के लिए प्रयास हो रहे हैं।

१.८संदर्भ सूची

1-यमदीप-नीरजा माधव-सुनील, साहित्य सदन, नई दिल्ली,संस्करण-2009

2-तीसरीताली-प्रदीप सौरभ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.

3-भारतीय साहित्यएवंसमाज में तृतीयलिंगी विमर्श, अमन प्रकाशन कानपुर.

4-महेंद्रभीष्म,'किन्नर कथा' सामाजिक बुक्स, नई दिल्ली 2011

5-गुलाम मंडी: निर्मलाभूराडिया, सामाजिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पहल संस्करण 2014

6-पोस्ट बॉक्स नं .203नालासोपारा: चित्रा मुद्गल सामयिक प्रकाशन , नई दिल्ली , प्रथम संस्करण 2016

7-मैं पायल:महेंद्र भिष्म, अमन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2016

8-मैं भी औरत हूं:डॉ. अनुसया त्यागी, परमेश्वरीप्रकाशन, न,ईदिल्ली.

9-हिंदी उपन्यासों के आईने में थर्ड जेंडर, विजेंद्र प्रताप, कानपुर,अमन 2017

10 अस्तित्व की तलाश में सिमरन, देवी मोनिका, कानपुर: माया 2018

11-मेरी दृष्टि तो मेरी है,अंसल, कुसुम, नई दिल्ली 2018

12-कथा और किन्नर, विजेंद्र प्रताप सिंह और रवि कुमार गोंड 2018

शोधकर्ताशोध निर्देशक

श्रीपरमेश्वर मानिकरावशवाकडेडॉ.रणजित जाधव